# पशु-पक्षियों पर आधारित यात्राकालीन शकुन मीमांसा

**डा.सुनयना भाटी**
**पीएच.डी. (संस्कृत विभाग)**
**दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली**

मानव का शकुनों में विश्वास सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। चर जगत् में मानवेतर पशु-पक्षी सहजानुभूति के माध्यम से दिव्य-सृष्टि के सूक्ष्म संकेतों को ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं। दिव्य घटनाओं का संकेत पशु-पक्षियों को पहले ही मिल जाता है, वर्षा एवं शीतलहर ही नहीं, भूकम्प एवं बाढ़ की प्राकृतिक सूचना भी पशु-पक्षियों को आधुनिक यन्त्रों के पूर्व ही मिल जाती है। पशु-पक्षियों के इस विशिष्ट घ्राण-शक्ति एवं चेष्टाओं के कारण ही 'शकुन-शास्त्र' का विकास हुआ।

**शकुन शास्त्र का लक्षण**- संस्कृत में 'शकुन' पक्षी विशेष को कहते हैं।[1] शब्दकल्पद्रुम के अनुसार-**"शक्नोति शुभाशुभं अनेनेति शकुनम्"** किसी कार्य के समय दिखलाई देने वाले लक्षण जो उस कार्य के सम्बन्ध में शुभ या अशुभ की सूचना देते हैं, शकुन कहलाते हैं।[2] पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार- ऐसी आकस्मिक घटना को, जिसे भविष्य का द्योतक समझा जाता है, शकुन कहते हैं; भविष्य के सम्बन्ध में अप्रत्याशित संदेश का नाम शकुन है।[3] शकुनों के प्रकार- प्राचीन भारतीय विद्वानों ने समस्त शकुनों को आठ भागों में बाँटा है, इन्हें पारिभाषिक दृष्टि से अष्टांग निमित्त कहा जा सकता है। निमित्त अर्थात् सूचना देने वाले हेतु, जिनमें भावी फल का ज्ञान संहिता ग्रन्थों में प्राप्त होता है। ये निमित्त निम्न है- भौम निमित्तः, अन्तरिक्ष निमित्तः, लक्षण निमित्तः, स्वप्न निमित्तः, व्यंजन निमित्तः, अंग निमित्तः, छिन्न निमित्तः, स्वर निमित्त।[4] वराहमिहिर ने शकुनों के दस भेद निम्न प्रकार से बताए हैं- क्षण दीप्त, तिथि दीप्त, नक्षत्र दीप्त, वायु दीप्त, सूर्य दीप्त, गति दीप्त, स्थान दीप्त, भाव दीप्त, स्वर दीप्त, चेष्टा दीप्त आदि।[5] पं. विजयानन्द त्रिपाठी ने बारात के बारह कार्यों को लेकर बारह प्रकार के शकुनों का वर्णन किया है।[6] संत कवि तुलसीदास जी के अनुसार शकुन तीन प्रकार के होते हैं- 1. क्षैत्रिक शकुन- वह है, जो पूर्व योजना के अनुसार देखा जाए।

2. आर्थिक शकुन- वह है, जो यात्रा के समय बायें या दायें अचानक उपस्थित हो जाए।

3. आगन्तुक शकुन- वह है, जो यात्रा के समय अपने आप ही उपस्थित हो जाए।

जब श्रीराम की बारात चलने को थी तब ये तीनों प्रकार के शकुन अपने आप उपस्थित हुए थे। संत कवि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में तीनों शकुनों को एक ही स्थल पर प्रस्तुत किया है।[7]

स्वर संबंधी शकुन- यात्रा आदि के समय यदि बायीं नासिका इड़ा नाड़ी (चन्द्र नाड़ी) चल रही हो तो बाएं भाग में जो भी शकुन हो वे प्रायः शुभ फलदायक रहते हैं, इसी प्रकार दाहिनी नासिका पिङ्गला नाड़ी (सूर्य

नाड़ी) चल रही हो तो दक्षिण भाग में होने वाले सभी शकुन उत्तम फल देते हैं। इसके विपरीत क्रम में होने वाले शकुन अशुभ फलदायी है, यदि दोनों नाड़ियां चल रही हो अर्थात् सुषुम्ना नाड़ी हो, तब न शुभ फल होता है और न ही अशुभ!

**पशु संबंधी शुभाशुभ शकुन-**

1. अश्व- यदि घोड़ा अपने बाएँ पैर से, जमीन को ठोके या खोदे तो स्वामी की यात्रा की सूचना देता है।[8] घोड़े का क्रौंचपक्षी की तरह शब्द करना, गर्दन को स्थिर और मुख ऊपर करके शब्द करना, उच्च स्वर से बार-बार मधुर ध्वनि करना, ग्रास से मुख अन्दर रहने पर भी आनन्दपूर्वक स्वर करना, शत्रु के वध का सूचक होता है।[9] 'पारिजातहरण' महाकाव्य में पारिजात वृक्ष हरण के लिये श्री कृष्ण का इन्द्र के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय घोड़ों का हिनहिनाना भावी विजय श्री का द्योतक माना गया है।[10] जो घोड़ा बार-बार पेशाब और टट्टी करे, मारने पर भी अभीष्ट दिशा में नहीं चले, बिना कारण डरे और जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हो जाये, वह अपने स्वामी का मंगल नहीं चाहता है।[11] रावण को समझाते समय उसके नाना माल्यवान् ने घोड़ों के नेत्रों से अश्रुओं के पतन को अशुभ सूचक माना।[12]

2. हस्ति- यदि प्रस्थान के समय सामने से हाथी आता हुआ दिखे तो व्यक्ति को अपने कार्य में अच्छी सफलता मिलती है।[13] चलता हुआ हाथी अचानक रूक जाय, कान हिलना बन्द हो जाय, अत्यन्त दीनतापूर्वक सूँड को भूमि पर रखकर धीरे-धीरे लम्बी सांस लेकर चले और अर्धोन्मीलित दृष्टि हो जाये, बहुत देर तक सोए, उल्टा चलने लगे, अभक्ष्य वस्तु खाए व रक्तमिश्रित टट्टी करे, तो ये चेष्टायें भय उत्पन्न करने वाली तथा अशुभ हैं।[14] 'रावणवध' महाकाव्य में प्रहस्त नामक राक्षस के रणभूमि के लिये प्रस्थान करते समय हाथियों का गतिहीन होना अशुभ सूचना के रूप में उल्लिखित किया गया है।[15]

3. गाय- यदि यात्रा के समय सामने से बछड़े सहित गाय आ जाए और वह सुखी सौम्य व प्रसन्न हो, अर्थात् घबराई हुई, डरी हुई, क्रोधित, छिक्कादि से विहीन स्वस्थ हो तो यात्री के प्रताप की वृद्धि होती है। उसे अपने धन की प्राप्ति हो जाती है और उसके शत्रुओं का नाश होता है।[16] 'विजयप्रशस्ति' महाकाव्य में बछड़ा सहित गौ का मिलना अत्यन्त शुभ कहा गया है।[17] यदि चलते समय गाय छींक दे तो मनुष्य (प्रस्थानकर्ता) के प्राणों का नाश हो जाता है।[18]

4. श्वान- कुत्ता यदि आकर पैरों के अग्रभाग को सूंघकर बाईं ओर चला जाए तो गृहस्वामी को तुरन्त ही समीप दूर की यात्रा होती है।[19] कुत्ता यदि गमन करने वाले के दोनों पाँवों को सूंघे तो यात्रा का निषेध करता है।[20] कुत्ता गाँव में शब्द करने के बाद, श्मशान में जाकर रोए तो उस गाँव के प्रधान पुरुष का नाश करता है।[21] महाभारत में पाण्डवों की रक्षा के लिये याचना करती हुई माता कुन्ती के समक्ष कर्ण ने कौरवों की नगरी में श्वानों के रूदन का कौरवों के भावी विनाश के सूचक के रूप में उल्लेख किया है।[22]

(5) मृग- यदि वन्य मृग गाँव की सीमा में दीप्त शब्द करते हुए स्थित रहें ओर, तात्कालिक उस सीमा से चले जायें तो भूत और सीमा प्रदेश की तरफ ही आवें तो भविष्य को सूचित करते हैं। यदि गाँव के चारो ओर घूमें तो गाँव को शून्य करते हैं।[23] मृगों का बाईं ओर से गुजरना अशुभ और दाईं ओर से गुजरना शुभ माना गया है। भगवान श्रीराम और लक्ष्मण जब सीता के स्वयंवर के लिये प्रस्थान करते हैं तो मार्ग में शुभ शकुन होते हैं तथा मृगमाला दाईं ओर से गुजरती है।[24] राम और लक्ष्मण के लिये इन्द्रजित द्वारा प्रयुक्त ब्रह्मास्त्र के बन्धन के पूर्व मृगों का बाई ओर से गुजरना अशुभ माना गया।[25]

(6) वानर- बन्दर का किलकारी मारना यात्रा के प्रारम्भ में शुभ नहीं होता है। 'चुग्लु' ऐसा शब्द शुभ फल की सूचना देता है।[26]

(7) गर्दभ- गमन करने वाले के वाम भाग के स्थित गदहा श्रेष्ठ है, यदि वह ओंकार शब्द करे तो गमन करने वाले का हित होता है, इसके अतिरिक्त गदहे के सब प्रकार के शब्द दीप्त कहे जाते हैं।[27] 'चन्द्रप्रभुचरित' महाकाव्य में युवराज सहित राजा अजितसेन के राजा पृथ्वीपाल के साथ युद्ध के लिये प्रस्थान करते समय बाईं ओर गर्दभ का बोलना विजय सूचक होने के कारण शुभ माना गया है।[28]

(8) सियार- यात्रा समय सियार दिखना सुखदायक शकुन होता है।[29] सियार दायीं ओर से या दक्षिण दिशा में शब्द करे तो उस व्यक्ति की मृत्यु व धनहानि एवं समग्र अनिष्ट फल की सूचना समझनी चाहिए। अतः दांयी ओर आकर बोलना अशुभ है। यदि शब्द न करे और दिख जाए तो शुभ फल ही होगा।[30] सब दिशाओं में सियार के दीप्त स्वर अशुभ होते हैं, किन्तु दिन में विशेष कर अशुभ होते हैं। अन्य सियार के साथ दक्षिण भाग में स्थित सियार शब्द करे तो मृत्यु को सूचित करते हैं। सियार यदि 'याहि याहि', शब्द करें तो अग्नि भय, 'टा-टा' शब्द करें तो मृत्यु, 'धिक्-धिक्' शब्द करें तो अति कष्ट ओर अग्नि की ज्वाला मुख से निकालने वाले सियार देश नाश को सूचित करते हैं।[31] 'किरातार्जुनीय' महाकाव्य में युधिष्ठिर के समक्ष द्रौपदी द्वारा श्रृंगालियों के शब्द का अशुभ-सूचक के रूप में उल्लेख किया गया है।[32]

(9) बिडाल- बिल्ली का शब्द गमन करने वाले के लिये सदैव अशुभ है।[33] 'बालभारत' महाकाव्य में कुरू सेनाओं के अभियान के समय मार्जारों का आर्तनाद होते हुए युद्ध करना कौरवों की पराजय का सूचक होने के कारण अशुभ माना गया।[34]

(10) वराह- यदि प्रस्थान के समय पानी के कीचड़ में खड़ा हुआ सूअर दिख जाए तो कार्य में सफलता मिलती है।[35]

(11) वृषभ और महिष- प्रस्थान के समय बैल अचानक सामने आ जाए तो शुभ फल प्राप्त होते हैं।[36] कोई व्यक्ति भैंसे पर बैठा हुआ आता दिखे तो मनुष्य के शरीर का नाश होता है।[37]

पक्षियों संबंधी शुभाशुभ शकुन

1. काक- यात्रा के समय कौआ, पंख फड़फड़ाता हुआ, यात्री के कान के पास से गुजर जाए तो सामान्य कुशलता रहती है, धन लाभ नहीं होता है। यदि बोलता हुआ कौआ, यात्री के सामने से यात्री की ओर चला आए तो भावी विघ्न की सूचना देकर, यात्रा का निषेध करता है।[38] संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने अच्छी जगह से बैठे हुये दाहिनी ओर से उच्चारित काक के शब्द को शुभ शकुन माना है।[39] ज्योतिष ग्रन्थ 'मुहूर्त्तचिन्तामणि' भी इसी तथ्य का समर्थन करता है।[40] शुभ वृक्ष यदि काँटेदार वृक्ष से युक्त हो तथा उस पर बैठकर कौआ बोले तो कार्यसिद्धि कलहपूर्वक होती है।[41] 'मृच्छकटिक' में काक द्वारा शुष्क वृक्ष पर रूक्ष स्वर से सूर्याभिमुख होकर काँव-काँव करना महान विपत्ति का सूचक माना गया है।[42]

2. उलूक- अपनी प्रिया की अभिलाषा करता हुआ उल्लू आनन्द से 'हुँ-हुँ गुगुलुक्' शब्द करे तो शुभ। 'किस्किकि' यह शब्द सदा प्रदीप्त है। जब उल्लू बार-बार 'बल-बल' यह शब्द करे तो कलह, 'टट्ट्ट' यह शब्द दोष करने वाला और शेष शब्द दीप्त होते हैं।[43] 'श्रीकण्ठचरित' महाकाव्य में उलूक से प्राप्त अनेक शकुनों का उल्लेख 'शिव' के साथ संग्राम के लिये किये जाते समय दैत्यों के मार्ग में नभस्थली का उलूकों से व्याप्त होना, दैत्यों के विनाश का सूचक था।[44]

3. श्यामा- यदि प्रस्थान के समय बांयी ओर श्यामा चिड़िया, गौरेया जैसी काली चिड़िया अथवा गौरैया या कवेधिकन्या चिड़िया आ जाए तो कार्यसिद्धि देने वाली होती है।[45]

4. सारिका- मैना यदि तीव्र गति से 'कक्रे कक्रे' शब्द करे या बिना डर के 'त्रेत्रे' शब्द करे तो यात्री के शरीर से शीघ्र ही खून बहने का संकेत करती है।[46]

5. चाष- चाष व कौए में लड़ाई हो रही हो और पराजित चाष, कौए के दक्षिण ओर स्थित हो तो यात्री की मृत्यु की सूचना देता है। कौए के उत्तर की ओर स्थित हो वह चाष विजयी समझा जाता है, तब यात्री की भी विजय होती है।[47]

6. कपिंजल- यात्री को चातक पक्षी प्रसन्न एवं आवाज करता हुआ दिखे तो राजा की कृपा एवं सुख प्राप्त होता है।[48]

**अपशकुन निवृत्ति विचार**

यात्रा करते समय यदि अपशकुन हो तो घर लौटकर जल पीकर ही पुनः यात्रा प्रारम्भ करें। यदि दुबारा अपशकुन हो जाय, तो कथमपि यात्रा न करें वरन् यात्रा का परित्याग कर दे। जैसा कि नारद संहिता में भी कहा गया है कि- गमन काल में प्रथम अपशकुन होने पर इष्टदेव का स्मरण करके यात्रा करनी चाहिए, यदि पुनः द्वितीय अपशकुन हो जाय तो ब्राह्मण की पूजा कर यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।[49] वराहमिहिर के

अनुसार यात्रा में पहली बार दुष्ट शकुन होने पर 11 बार गायत्री मन्त्र सहित प्राणायाम करें। दुबारा दुष्ट शकुन होने पर 16 बार प्राणायाम करें तथा तीसरी बार दुष्ट शकुन होने पर घर लौट जाएं।[50]

**यात्रा में दिशापति का पूजन**

यात्रा आरम्भ करने से पहले यात्रा काल में दिशापति का पूजन करें और उन्हीं के मन्त्रों से तिलों का अग्नि में हवन कर देवता तथा ब्राह्मणों को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें एवं दिशापति के मन्त्र से पुनः हवन कर यात्रा करना सुखद होता है।[51] साथ ही यात्रा के दिन रविवार को श्रीखण्ड, सोमवार को खीर, मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को दूध, गुरुवार को दही, शुक्रवार को क्षीर, और शनिवार को तिल और भात खाकर यात्रा करना शुभ फलदायक होता है।[52]

आज के इस युग में देश-काल परिस्थितियां, सब कुछ बदल गई हैं। अब बड़े शहरों एवं महानगरों के मार्ग में न तो हाथी मिलता है, न गदहे लोटते हुए दिखलाई देते हैं, न ही हमें मार्ग में शकुन चिड़ी या कोयल के स्वर सुनाई पड़ते हैं। अब जलपूर्ण घट वाली पनिहारिन की जगह बाल्टी, जग आदि ने ले ली है। चित्र-विचित्र पशु-पक्षियों व जानवरों की जगह चित्र-विचित्र वेशभूषा वाले नर-नारियों ने ले ली, उनके मधुर शब्द या कर्कश शब्द एवं आचरण शकुन की श्रेणी में आ सकते हैं। संक्षेप में कहें तो परिस्थितियाँ चाहे जितनी बदल जाये, ऋषियों के ज्ञान की धरोहर की मूल भावना एवं शकुनों की सार्थकता आज भी नहीं बदली है। शकुनों की उपादेयता व अक्षुण्णता, दैनिक लोक-व्यवहार में आज भी ज्यों की त्यों प्रचलित है।

**संदर्भ**


1. संस्कृत हिन्दी कोश- शिवराम आप्टे, पृ. 996
2. शब्दकल्पद्रुम (पंचम काण्ड), पृ. 2
3. An Omen is an event which is supposed to indicate destiny, the chief feature being the gratuitous nature of the happening, it is a message about the future which we do not seek for.

   T. Sharper Knowison; The origin of popular superstitions and customs, 1930, p. 162
4. कपूर, गौरीशंकर- स्वप्न और शकुन, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2001, पृ. 106
5. बृ.सं. 85/15
6. मा. पी. 3/303, पृ. 682
7. राम.मा. बालकण्ड, 304
8. बृ.सं. 92/10
9. बृ.स. 92/7
10. पारि.ह., 8/16
11. बृ.सं. 92/14
12. वा.रा., युद्धकाण्ड, 35/25

13. वृ.य.जा., भा. 2, 67/14
14. बृ.स. 93/12
15. रा.व., सर्ग 15/98
16. वृ.य.जा, भा. 2, 71/6
17. वि.प्र. 6/18
18. वृ.य.जा., भा. 2, 67/25
19. वृ.य.जा., भा. 2, 70/4
20. बृ.सं. 88/12
21. वही 88/14
22. बाल. उद्योगपर्व, 5/26
23. बृ.सं. 90/1
24. मा.पी. 3/303
25. रा.व. 14/20
26. बृ. सं. 87/22
27. वही 87/32
28. चन्द्र.च. 15/27
29. वृ.य.जा., भा. 2, 67/24
30. वही, 67/27
31. बृ.सं. 89/5
32. कि.अ. 1/38
33. बृ.सं. 87/35
34. बा.भा. उद्योगपर्व, 5/72
35. वृ.जा., भाग.2, 67/13
36. वही, 67/15
37. वही, 67/22
38. बृ.सं. 94/25
39. मा.पी. 3/303
40. मु.चि. 11/106
41. ब.सं. 94/37
42. मृच्छ. 9/10
43. बृ.सं. 94/36
44. श्रीकण्ठ 22/36
45. वृ.य.जा., भा.2, 67/16
46. बृ.सं. 87/30
47. वही, 87/24
48. वृ.य.जा., भा. 2, 67/29
49. ना.सं. 33/91
50. ब.सं. 94/62
51. ना.सं. 33/67
52. वही 33/62